BABASAHEB BHIMRAO AMBEDKAR UNIVERSITY
LUCKNOW
प्रज्ञा शील करुणा
ESTABLISHED 1996

मातृदेवो भवः।
समस्त मातृशक्ति को सादर प्रणाम।

माँ जीवन की प्रथम गुरु, प्रथम संस्कार और प्रथम संवेदना हैं। उनके स्नेह में त्याग, करुणा है और मानवता का शाश्वत प्रकाश समाहित है।

एक शिक्षण संस्थान के रूप में हम अनुभव करते हैं कि किसी भी सभ्य और संस्कारित समाज की आधारशिला मातृशक्ति ही होती है। आज के समय में समाज में करुणा, संवेदना, धैर्य, प्रेम और सह-अस्तित्व जैसे मानवीय मूल्यों में निरंतर कमी अनुभव की जा रही है जिसके परिणामस्वरूप तनाव, संघर्ष, असहिष्णुता और सामाजिक कटुता की प्रवृत्तियाँ बहुत बढ़ गई हैं। ऐसे समय में मातृशक्ति की संवेदनशीलता, संयम, प्रेम और संस्कार ही समाज को पुनः मानवीय मूल्यों की ओर अग्रसर कर सकते हैं। मातृशक्ति में वह नैतिक और भावनात्मक सामर्थ्य निहित है, जो टूटते संबंधों को जोड़ सकती है तथा समाज में समरसता, सहिष्णुता और आत्मीयता का वातावरण निर्मित कर सकती है।

इस विशेष अवसर पर मैं समस्त नारी शक्ति के धैर्य, त्याग और समर्पण को नमन करते हुए अपनी गहन कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ तथा सभी के सुखी, स्वस्थ एवं सम्मानित जीवन की कामना करता हूँ।

आचार्य राज कुमार मित्तल
कुलपति
बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ